सद्गुरु तत्व बोध

SADGURU TATV BODH

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan" 5, Jasola Vihar,
(Behind Apollo Hospital)
New Delhi-110025
Ph: 26956561-62
Fax: 91-11-26955261
E-mail: saikalp@gmail.com
saikalp@yahoo.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay K.Varma
Jogesh Grover

Subscription
INLAND
Yearly Rs.100.00
Life Time Rs.500.00

OVERSEAS
Yearly .... US$ 50.00
Life Time .... US$200.00

Printed by
PNV CREATIONS
New Delhi-110008
Phone: 011-41544399

PUBLISHED EVERY MONTH

© All rights reserved with the Publisher

ॐ

" ॐ श्री साईनाथाय नमः "
" ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः "

नई दिल्ली — **श्री साई शके : 27**
अंक—छियासी — **अप्रैल, 2009**

शक्तिपीठ

"शक्तिपीठ की स्थापना करते हुए शास्त्र-शस्त्र-अस्त्र और मंत्र-तंत्र-यंत्र का विचार करना पड़ा। "मैं अधिकारी हूँ, मुझे शास्त्रों का पालन करना आवश्यक नहीं है" इन विचारों का विचार करना उचित नहीं होता। खुद से किसी और को श्रेष्ठ माने बगैर "मम" भावना जाकर "अस्माकं" भावना उदित नहीं होती अर्थात् "मैं" "मेरा" के बदले में "हम" "अपना" यह भाव निर्माण नहीं होता याने अहंकार का निर्मूलन नहीं होता तथा खुद को श्रीगुरू ने दुर्गुनों के साथ भी किस तरह गले लगाया है यह ज्ञान जब तक नहीं होता तब तक औरों के प्रति प्रेमभाव निर्माण नहीं होता। ऐसी गुरूकृपा प्राप्त होकर दीक्षाओं का लाभ काफ़ी सुलभता से हुआ है अत: अब विकास करा लेना अपना कर्तव्य है। विकास की खातिर हमें कोई अलग वैयक्तिक साधन बताया नहीं है।"

''दैनंदिन साधना घर में करके सामुदायिक आरती तथा सामुदायिक साधना अनुष्ठान करने का मार्गदर्शन किया है। आरती में श्रीपंत का शब्द ब्रह्म तो है ही मगर उसके अलावा श्रीगोरखनाथ की आज्ञा से नाथपंथ की सिद्ध साधनाओं का समावेश भी इन आरतीयों में किया गया है इसीलिए आरती गाते वक्त विमोचन तथा दीक्षाओं का कार्य आपके देह माध्यम में होता रहता है इतना आसान मार्ग श्रीगुरू ने प्राप्त करा दिया है। हम भगवान के मिलन की आस रखते हैं मगर भगवान स्वयं भक्त को मिलने जब आता है तो वही ''अनुष्ठान'' है। सामुदायिक अनुष्ठान से एक दूसरे की कमी दूर हो जाती है। अधिकार प्राप्त होने के बाद सहनशीलता की कमी होने लगती है। आरती एवं अनुष्ठान का लाभ लेते हुए हमने एक-दूसरे की कमियों का एहसास अगर न दिलाया तो ''मन'' अवस्था का विकास होकर अध्यात्म का माध्यम जो ''चित्त'' है उसका लाभ आपको मिलेगा। इस लाभ के पश्चात् ही ईश्वर के गुण, दया, क्षमा, शांति आपके माध्यम से व्यक्त होंगे। यह अवस्था आपको प्राप्त करनी है,'' ऐसा बोध दादाजी ने किया।

इस तरह शक्तिपीठ का कार्य शुरू हुआ और दुनिया के लोगों को इसका लाभ मिल रहा है यह हम आज देख ही रहे हैं। इस शक्तिपीठ के प्रतीक के रूप में जो तीन प्रतिमाएं सबको दी गई हैं वे आप सभी के परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी कार्य करती रहेंगी ऐसी योजना सद्गुरू दादाजी ने की है।

अब इसके आगे का भाग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शक्तिपीठ स्थापना का समारोह बढ़िया ढंग से सम्पन्न हुआ और सभी भक्त इसका आनंद लूटकर वापस चले गए। इसके कुछ दिनों बाद सद्गुरू दादाजी ने अगली योजना बनायी। उन्होंने कहा, ''विश्व की धारणा में दो तत्व हैं — पुरुष तथा प्रकृति। कोई भी सिद्धता पुरुष माध्यम से होने के बाद उसे कार्यान्वित करने का कार्य प्रकृति तत्व से करना चाहिए। आगे चलकर यही कार्य करना है। शक्तिपीठ स्थापना का कार्य मैंने शक्तिवलय से किया मगर आगे का कार्य जारी रहे इसके लिए आपको शक्ति वलय से जोड़ दिया है। यह शक्ति कार्यान्वित होने के लिए प्रकृति अवस्था का होना आवश्यक है। जब अवस्था उचित होगी तब 12 साल के बाद आपको एक विधि करना पड़ेगा। यह कार्य मैं आपसे करवा लूँगा मगर मैं उसे दूर से ही निहारूँगा। यह विधि पूरी होने के बाद शक्तिपीठ का जो कार्य समूचे विश्व में कार्यान्वित होगा उसके लिए आप सब को सिद्ध होना चाहिए।''

शक्तिपीठ स्थापना को 12 साल पूरे

होने के बाद चैत्र प्रतिपदा, 1 अप्रैल 95 के दिन हम सब ने इकट्ठा होकर जो समारोह मनाया इसका मार्गदर्शन श्रीदादाजी ने उसी समय किया हुआ था। इतना ही नहीं बल्कि आपको निवेदनों में जो सूचनाएँ की गयी थीं वे भी श्रीदादाजी ने उस समय सूचित की थीं। केवल ''मैं दूर से ही निहारूँगा'' इस वाक्य का अर्थ उस समय हमारे समझ में नहीं आया था। आज पिछले 12 सालों में शक्तिपीठ की शक्ति जो अब तक कामकाज में कार्यान्वित हुई होगी उसका पूनः निर्माण करने के लिए तथा अब उसे प्रकृति तत्व से कार्यान्वित करने का कार्य जब होगा तब सद्गुरू दादा उनकी योजनानुसार वहाँ अवश्य हाजिर थे यह सत्य है। उस समय, पिछले चार सालों में हमने अपने माध्यम का कितना विकास प्राप्त किया है? सेवक के रूप में हम कितना प्रेम, अपनापन एक दूसरे में समझौता कितनी मात्रा में व्यक्त करते हैं? जब इसका अवलोकन दादाजी ने किया था तब हमारे पास क्या था? इस लोक कल्याण कार्य में सहभागी होने का भाग्य भगवान ने हमें प्राप्त कर दिया है। ''भाग्य'' का अर्थ क्या है? जिसका किसी भी तरह भाग (बँटवारा) नहीं किया जा सकता ऐसी सच्चाई। मगर जो भाग्य हमें प्राप्त हुआ है उसे हम अपने ही गलत आचरण से भाग (बाँट) देते हैं, यह सोचने की बात है क्योंकि शक्तिपीठ समारोह का कार्य जो हुआ वह जिंदगी में एक ही बार होने का था। 12 सालों बाद जो समारोह हुआ उसे अगले 100 सालों में फिर से दोहराना पड़ेगा ऐसी सूचना दादाजी ने दी है। इसी के लिए हमें ''नारायणी'' प्रतिमा दी गयी थी यह ध्यान में रखना आवश्यक है। अर्थात् 12 सालों बाद होने वाले समारोह की पूरी तैयारी दादाजी ने पहले ही कर रखी थी तथा ऐसा आवाह्न उन शक्तियों को भी किया था इसीलिए यह कार्य हो सका। उस समय जो शक्ति का अंश हमें प्राप्त हुआ उसे जतन करके वृद्धिंगत करने का कर्त्तव्य हमें करना चाहिए।

कुछ बंधनों का पालन करने की आज्ञा हमें दी गयी थी क्योंकि यह सिद्ध साधना नाथ पंथ की प्रखरता कम की, जिसकी वजह से हम आज प्रापंचिक अवस्था में भी उसका लाभ उठा सकते हैं। हम आज—''दादाजी के अनुगृहित'' हैं इसलिए इस नाथपंथ ने हमें पनाह दी है फिर भी अब व्यसनाधीनता का अनुसरण उचित नहीं रहेगा। यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि नाथपंथ यह एक ही ऐसा पंथ है जो अढ़ाई हजार सालों से कार्यरत है और उसका सूत्र है आज्ञापालन करना। इसके आगे अब कार्य केंद्र के सेवकों में मतभेद एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या, पीठ पीछे निंदा, उलाहना, वाद-विवाद आदि का

2008/06/02

प्रयोग नाथपंथ की कार्य पद्धति के खिलाफ़ है। यह बाद ध्यान में रखना आवश्यक है। सेवकों से कार्य के लिए पोषक आचरण अपेक्षित हैं तथा ''मध्यस्थ'' बनकर अपना विकास प्राप्त कर लेने से ''चित्त'' अवस्था तथा ''पश्चंती'' वाणी प्राप्त होकर ''तन्मात्र'' माध्यम से हम कार्य कर सकते हैं। मगर यह होने के लिए हमें ही प्रयत्न करने चाहिए। बाह्य वचनों से अगर औरों की निंदा सुनना हमने बंद किया तो अंतकर्ण जागृत होंगे तथा ईश्वर की वाणी हम सुन सकेंगे। औरों की सुख सम्पत्ति देखकर ईर्ष्या तथा औरों के प्रति क्रोध व्यक्त करने का कार्य अगर हमारी बाहरी आँख रोक दे तो अत: चक्षू जागृत होंगे जिससे सामने आये हुए दु:ख मिमांसा का ज्ञान तो हमें होगा ही और उसके दैनंदिन जीवन के आचरण की भी पहचान हमें हो जायेगी। अगर हम अपनी वाणी पर संयम रखना सीख गये तो हमें ''वाचा सिद्धि'' प्राप्त होगी। अगर कोई व्यक्ति हमारे दोष दिखाता है तो उसे उल्टा जवाब देने के बजाय अगर हमने यह सोचा कि ''उसने जताया हुआ दोष याने मेरी कमजोरी है जिसे मुझे सुधारना चाहिए'' तथा अगर हमने अपने आपको सुधारने की कोशिश की और उस व्यक्ति को शुक्रिया अदा किया तो उसी को कहते हैं ''मीठे बोल बोलना'' तथा गुस्सा आने के बाद उसे व्यक्त करते हुए मेरी शक्ति का अपव्यय हो रहा है ''ऐसा अगर हमने सोच लिया तो हमारा विकास हो जायेगा क्योंकि सहनशीलता बढ़ाना यही आध्यात्मिक विकास का अंग है।''

''सेवक'' बनकर आगे का रास्ता तय करना अति महत्व की बात है। जिस काल में धर्मरक्षा की जरूरत थी उस जमाने में आदि शंकराचार्य ने धर्मपीठ स्थापित किये। आज जो संहारक शक्तियाँ विश्व में निर्माण हो रही हैं उससे ''जीवनरक्षा'' की आवश्यकता है तथा भविष्य में सभी को ''मानव'' के रूप में एक साथ लाने वाले मार्ग की तथा तत्वज्ञान की जरूरत होगी और ऐसे कार्य में अपने कर्त्तव्य का हिस्सा लेने के लिए आवश्यक दृढ़ निश्चय से युक्त हमारी धारणा होनी चाहिए। इस कार्यसिद्धि के लिए सभी केंद्रों पर विभूतियों की प्रार्थना करके उन्हें आवाहनित किया गया था। यह कार्य इस तरह परिपूर्ण हुआ कि उसके बाद श्रीसाईंनाथ महाराज ने दादाजी से दैनंदिन प्रार्थना में बदल करके एक बिंदु और जोड़ दिया और ''अगले जन्मों की चिंता'' ऐसा उच्चार आगे करने की आज्ञा दी। इस संदर्भ में ख्वाजा कुतुबुद्दीन बाबा ने कहा था—''आपके गुरूदेव हम विभूतियों से भी आगे पहुँचे हुए हैं। हम जब उनकी तरफ देखते हैं तब साईं जी नजर आते हैं और जब साईंजी

की तरफ देखते हैं तब हमें दादाजी नजर आते हैं।'' आज तक गुरू को अपने दिल में जगह देने वाले अनेक शिष्य हुए होंगे, मगर गुरू के अंदर स्थान प्राप्त करने वाले अद्वितीय शिष्य केंवल एकमात्र हैं— श्रीसद्गुरूनाथ दादा!

बारह साल पूर्व श्रीशक्तिपीठ स्थापना के बाद बालेकुंद्री को जब दादाजी गये थे तो वहाँ उन्हें श्रीपंत महाराज की जगह श्रीज्ञान देवजी का दर्शन हुआ था। उस समय दादाजी काी भावुक हुए थे। आँसुओं की धारा बह निकली थी। उस समय श्रीज्ञान देवजी दादाजी से बोले, ''पसायदान का उच्चार मैंने किया था। सभी धर्मों का जो मूल ऐसे विश्व शक्ति से ''सभी प्राणिमात्रों को उनकी इच्छानुसार फल मिले।'' ऐसी दुआ मैंने माँगी मगर उस शक्ति को भूलोक में स्थान देकर उस आशीर्वाद से साकार करने की सिद्धता तुमने की। धन्य है तूं और धन्य हैं तुम्हारे सद्गुरू।''

1 अप्रैल 1995 के शक्तिपीठ समारोह के लिए सभी गुरू बंधुओं को धुली धोती तथा गुरूभगिनी को सफेद साड़ी पहननी चाहिए। ऐसी सूचना दी गयी थी। इसके पहले गोवा के देव देवताओं को पान सुपारी नारियल रखकर प्रार्थना करने के लिए जब सेवक गये थे तब यह करिश्मा देखने को मिला कि माँ श्रीशांता दुर्गा वस्त्र पहनकर आसन पर विराजित थी तथा श्रीमंगेश जी का मंदिर सफेद फूलों से सुशोभित किया हुआ था। देव देवताओं का इतना सहकार्य श्रीसद्गुरू नाथ दादाजी के कार्य को मिला हुआ है।

श्रीशक्तिपीठ स्थापना के लिए ईश्वर को एक मध्यस्थ की आवश्यकता थी। यह कार्य दादाजी ने परिपूर्णता से साकार किया। अब इस शक्ति का कार्य दुनिया में कार्यान्वित होने के लिए अनेक माध्यमों की आवश्यकता है। हम भक्त अपने दु:ख निवारण कर लेने के लिए दादाजी की चरणों में पधारें पर इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि आगे इस कार्य को जारी रखने के लिए परमेश्वर ने हमें चुन लिया है। इसके लिए दादाजी ने सिद्ध की हुई ॐ-कार साधना नियमित रूप से हमें करनी चाहिए। ॐ-कार माध्यम से ही आगे का कार्य होगा। ॐ-कार यह ध्वनि है अत: सभी धर्म के लोग यह साधना कर सकते हैं। संगीत सभी को आनंद देता है और यह संगीत जिस कलाकार की वाणी से या वाद्यों से व्यक्त होता है उस कलाकार का धर्म या पंथ सुनने वाले व्यक्ति के आनंद में बाधा नहीं डाल सकता।

श्रीशक्तिपीठ समारोह के समय हम सब ने मिलकर ऐसा संकल्प किया है कि ''विश्व शांति के लिए दुनिया के सभी खंडों में श्रीस[illegible] की पादुकाओं की स्थापना हम करेंगे। इस

कार्य को साकार करने के लिए उस शक्ति का सहयोग हमें निश्चित ही मिलेगा क्योंकि ''दादाजी दुनिया के शहंशाह बनने वाले हैं'' ऐसा विभूतिओं का वचन है।

इस कार्य में आगे हम गुरूबंधु भगिनीयों का कर्तव्य क्या है ? चंद चमत्कारों पर आधारित यह कार्य नहीं है क्योंकि दत्र-नाथ-सूफ़ी पंथ के विभूतियों का तथा देव देवताओं का सहयोग, सहभाग और सुसंवाद प्राप्त कर लेने पर भी दादाजी को दिन रात लगातार परिश्रम करने पड़े, यह हमने देखा है। इसलिए आगे के कार्य के लिए अपने अंदर से विचारों की निश्चितता, आचरण की दृढ़ता और उच्चारों की नम्रता व्यक्त होनी चाहिए। ऐसी अवस्था अगर हमने प्राप्त कर ली तो ''मनोनिग्रह'' की सहज स्थिति हमें प्राप्त हुई है ऐसा अनुभव हमें मिलेगा।

श्रीशक्तिपीठ समारोह यह चंदा इकट्ठा करके अथवा दान मांगकर मनाया नहीं गया। दैनंदिन जीवन में मनोनिग्रह करके जो कुछ वचत आपने की थी उसमें से ही ''गुरू दक्षिणा'' के रूप में कुछ अर्पण करने के लिए आपसे कहा गया था। आगे आपके परिवार के बाल बच्चों को भी श्रीशक्तिपीठ दर्शन के लिए ले जायेंगे मगर उसके पहले आप उन्हें भी परमार्थ प्रश्नावली के इस प्रश्न के अनुसार आचरण करने की आदत डलवा दें।

''खाना-पीना, वस्त्राभूषण, ऐशो-आराम अथवा मनोरंजन इनसे खुद के लिए खर्च होने वाले अनावश्यक खर्च में से परोपकार के लिए अथवा इंद्रियनिग्रह करने हेतु से आपने कोई बचत की है क्या ?''

इस प्रश्न को ध्यान में रखकर दैनंदिन जीवन में बचत करके उसका हिसाब रखने की आदत आप अपने बच्चों को डाल दें। यह बचत गुरू दक्षिणा के रूप में अगर वे शक्तिपीठ के सामने अर्पण करेंगे तो उन्हें एक अनोखे समाधान का अनुभव मिलेगा तथा मन की विकसित अवस्था में जीने की आदत भी उनमें उत्पन्न होगी जो उन्हें भविष्य में जरूर काम आयेगी। ऐसे संस्कार अगर बचपन से ही आपके बच्चों पर हुए तो आज हमें प्राप्त हुई गुरूकृपा उनके जीवन में साकार होकर उनका भविष्य उज्ज्वल, समृद्ध तथा प्रकाशमान हुआ है यह देखने का भाग्य आपको प्राप्त होगा।

(शेष अगले अंक में)